International Journal of Engineering and Science Invention (IJESI)
ISSN (Online): 2319-6734, ISSN (Print): 2319-6726
www.ijesi.org ||Volume 11 Issue 5 Series I | May 2022 || PP 66-79

शेखावाटी में पर्यटन विकास की समस्याएं सम्भावनाऐं एवं समाधान का भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. भवानी प्रसाद शर्मा
सह आचार्य, भूगोल विभाग, एस. एस. जैन सुबोध स्ववित्तपोषित स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामबाग सर्किल, जयपुर (राज.) 302004

शोध सारांश
शेखावाटी क्षेत्र पर्यटकों के लिए स्वर्ग है। जो राजस्थान के उत्तरी– पूर्वी भाग में स्थित है। शेखावाटी क्षेत्र पर्यटकों के लिए यहाँ स्थित किले, बावड़ियों, मंदिरों, दरगाह, छतरियों, भिति चित्रकला से युक्त हवेलियों के लिए आकर्षण का मुख्य केंद्र है। स्थानीय संस्कृति से सराबोर लोगों की मेजबानी जिसमें स्थानीय संस्कृति से जुड़े ग्रामीण खेल, स्थानीय खानपान, हस्तशिल्प वस्तुओं तथा ग्रामीण लोक जीवन की झांकियाँ तथा पहनावे की प्रदर्शनी यहाँ के उत्सवों में पर्यटकों का मनमोह लेती है। तथा यहीं बसने का अनुभव कराती है। शेखावाटी क्षेत्र परिवहन सुविधा की दृष्टि से राजस्थान में काफी समृद्ध है। यह राजस्थान की राजधानी जयपुर तथा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से हवाई सड़क तथा रेल–मार्ग सुविधा द्वारा सीधा जुड़ा है, जबकि अन्य शहरों से भी यह सड़क मार्ग तथा रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत शोध के अनुसार शेखावाटी क्षेत्र के ग्रामीण भागों में पर्यटन की सम्भावनाओं को देखा गया है। 64 प्रतिशत से अधिक स्थानीय लोगों एवं आने वाले पर्यटकों के साथ साक्षात्कार के आधार पर ज्ञात होता है कि शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन की अपार सम्भावनाऐं व्याप्त है। जिनमें ग्रामीण क्षेत्र की स्थानीय कला संस्कृति जैसे–यहां की स्थानीय तौर पर बोले जाने वाली शेखावाटी बोली, इसप र उपलब्ध साहित्य आदि के अलावा फरवरी माह में मनाये जाने वाला शेखावाटी उत्सव, जिसका आयोजन पर्यटन विभाग करता है, ग्रामीण पर्यटन के लिए एक पोषित स्थान के रूप में उभर रहा है। यह क्षेत्र न केवल स्थानीय लोगों को बल्कि पूरे देश एवं विदेश के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ की शिल्पकला, कलाकार, आतिशबाजी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कृषि भ्रमण, ऊंट एवं जीप की सफारी एवं अन्य गतिविधियाँ ग्रामीण पर्यटन को बढ़ाने में योगदान दे रही है। यहां पर मोरारका फाउंडेशन के द्वारा शुरू किया गया इको पर्यटन भी क्षेत्र की छवि को विकसित कर रहा है। क्षेत्र की अर्द्ध–रेगिस्तानी प्रवृति में रंगीन चित्रित हवेलियाँ पूरे शेखावाटी को रंगीन बनाकर पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। उक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि क्षेत्र में पर्यटन की वर्तमान उपलब्धता के अलावा भी क्षेत्र में पर्यटन की अपार सम्भावाऐं स्थित है।

मुख्य बिन्दु :– शेखावाटी में पर्यटन विकास, पर्यटन विकास में सरकारी प्रयास, पर्यटन उद्योग से संबंधित समस्याएँ, सुधार की सम्भावनाएँ, विशेष पर्यटन अंचल, पर्यटन विकास की योजनाएं, पर्यटन विकास की समस्याऐं एवं उनका समाधान एवं निष्कर्ष ।

परिचय :–

पर्यटन, दरअसल एक बहुत ही ऐच्छिक क्रिया है जो समस्त जनता एवं सरकारों द्वारा प्रशंसा प्रोत्साहित करने योग्य है। यह एक ऐसी क्रिया है जो लोगों को उनके आगमन पर नियत स्थान की तरफ आकर्षित करने, उन्हें वहां तक पहुंचाने, आवासित करने, आहार प्राप्त करने, मनोरंजन करने तथा उनकी वापसी पर उन्हें घरों तक पहुंचाने से संबंधित है। मोटे तौर पर पर्यटन की परिभाषा करें तो लगातार एक वर्ष या उससे कम समय तक सैर–सपाटे, व्यापार तथा अन्य कार्यों के लिए अपने रहने के सामान्य स्थान से बाहर घूमने तथा ठहरने वाले व्यक्तियों से जुड़ी गतिविधियों को पर्यटन कहा जा सकता है।

आज जब देश–विदेश की यात्रा संबंधी विभिन्न संघटकों के कार्यकलापों का राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विनियमन होता है, तो पर्यटन के विभिन्न पहलुओं के बारे में सूचनाओं के एकीकरण, सारणीयन और प्रचार के लिए 'पर्यटन' शब्द को परिभाषित करना अत्यन्त ही आवश्यक है। दरअसल आज होटलों, स्मारकों, मार्गदर्शकों, पर्यटन सुविधाओं के विकास, पर्यटन सूचनाओ के व्यापक प्रचार–प्रसार संबंधी विभिन्न क्रिया कलापों के अंतर्गत एकत्रित आंकड़ें ही प्रमुख होते हैं।

अंग्रेजी शब्द ट्यूरिज्म (ज्व्न्त्पेड) अर्थात पर्यटन का संबंध टूर (ज्व्न्त) अर्थात् यात्रा से ही है। टूर (ज्व्न्त) शब्द लेटिन भाषा से लिया गया है। इसे यात्रा के लिए प्रयोग करने के पीछे भी प्रमुख कारण छुपा हुआ है। दर असल ज्व्त्छने का अर्थ एक प्रकार के औजार से है, जो एक पहिये की भांति गोलाकार होता है। यह एक गोलाकार पिण्ड़ है। इसी ज्व्त्छने शब्द से यात्राचक्र या पैकेज टूर या एकमुश्त यात्रा के विचार का सृजन हुआ लगता है। यही शब्द आधुनिक पर्यटन का आज मुख्य आधार है। शब्द अनुसंधानों से पता चलता है कि करीबन 1643 में इस शब्द का प्रयोग विभिन्न स्थानों

की यात्रा, मनोरंजन, भ्रमण आदि के लिए किया गया था। यहाँ भी यह बात रोचक है कि टूर (ज्न्त्) एक हिब्रू शब्द है जो कि हिब्रू शब्द ज्व्।ीभ से लिया गया है। वास्तव में इस शब्द का अर्थ है–अध्ययन या खोज। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि हिब्रू शब्द ज्व्।ीभ यहूदियों के विधान से सम्बन्धित है। यहूदी विधान यहूदियों के रहन–सहन की परिभाषा वर्णित करता है। इस कड़ी में ज्न्त का अर्थ है कि यात्रा किसी विशेष स्थान पर जाकर खोज करना है। ठीक उसी प्रकार एक पर्यटक की जिज्ञासा होती है कि वह उस स्थान के संबंध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें– जिसके बारे में उसने सुना है। साथ ही उस स्थान विशेष के बारे में वहां की रोजगार व व्यापार संभावनाओं, स्वास्थ्य एवं शिक्षा, पर्यावरण व मनोरंजन आदि के बारे में भी पूर्ण जानकारी प्राप्त करने की लालसा रहती है।

पर्यटन शब्द व्यापक है और इसके संबंध में आज अलग–अलग मान्यताएं व धारणांए विश्व स्तर पर है। जहां आदिकाल से इसे व्यक्तित्व विकास की क्रिया के रूप में समझा गया वहीं आज देश, राज्य और स्थानीय विकास की अवधारणा में इसे सम्मिलित कर लिया गया है। अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी में पर्यटन पर कुछ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ सकते हैं। पर्यटन के लिये सुविधाऐं जुटाने से देहात में बुनियादी अवसंरचना के विकास में बढ़ोतरी होगी। इससे ग्रामीण क्षेत्र में कंक्रीट बढ़ेगा, जिससे उनका प्राकृतिक सौन्दर्य कम हो सकता है। इसके अलावा, पर्यटकों की बढ़ती संख्या से प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी हो सकती है। तीर्थाटन पर्यटन का एक ऐसा रूप है। जो आंशिक या पूर्ण रूप में धार्मिक भावनाओं को प्रेरित करता है। भारत अनेक धर्मो का देश है, जैसे हिन्दू धर्म, इस्लाम, बौद्ध धर्म, सिख धर्मों के देश के विभिन्न भागों में प्रमुख तीर्थस्थल हैं। धर्म और आध्यात्मिक यात्रा के लिये समान रूप से प्रेरित करते हैं। यही कारण है कि प्रमुख पर्यटक लक्ष्यों का विकास उनके धार्मिक स्थलों, व्यक्तियों ओर घटनाओं से जुड़े होने के कारण हुआ है अतः प्रस्तुत शोध पत्र में शेखावाटी में पर्यटन विकास की समस्याएं सम्भावनाऐं एवं समाधान का भौगोलिक विश्लेषण किया गया है ।

उद्देश्य :–

1. शेखावाटी प्रदेश में पर्यटन का भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करना ।
2. अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी प्रदेश में पर्यटन विकास की योजनाओं को स्पष्ट करना ।
3. शेखावाटी प्रदेश में पर्यटन विकास की समस्या एवं समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना ।

परिकल्पना :–

1. अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी प्रदेश में पर्यटन विकास हेतु सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं ।

आँकड़ो का संग्रह :–

प्रस्तुत शोध पत्र में शेखावाटी प्रदेश के पर्यटन विकास के अध्ययन हेतु द्वितीयक आँकड़ो का उपयोग सरकारी व गैर सरकारी रिपोर्ट, प्रकाशित शोध प्रबंध, समाचार पत्र, पर्यटन विभाग व जिला कलेक्टर कार्यालय से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया गया है।

स्थिति एवं विस्तार :–

शेखावाटी प्रदेश में सीकर एवं झुन्झुनूं जिले की सभी तहसीलों को सम्मिलित किया है। झुन्झुनूं के समान सीकर भी जयपुर राज्य का भाग रहा है। यहाँ के शासकों ने शेखावाटी को अलग राज्य बनाने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु सफल न हो सके तथा यह मुगल साम्राज्य का अंग और जयपुर राज्य के अन्तर्गत ही रहा।

अध्ययन का क्षेत्र शेखावाटी क्षेत्र लिया गया है। शेखावाटी का नाम अति प्राचीन नहीं है। विक्रमी संवत् 1502 (1445 ई.) में राव शेखा में इस इलाके को जीत कर एक छोटे से राज्य की स्थापना की तथा शेखा के वंशज शेखावत कहलाये, जिन्होनें सीकरवाटी व झुन्झुनूंवाटी पर अधिकार कर विस्तृत राज्य स्थापित किया, जो शेखावाटी नाम से प्रसिद्ध हुआ। राजस्थान में झुन्झुनूँ और सीकर जिला पूर्णतया जबकि चुरू जिले का कुछ भाग शेखावाटी अंचल में आते हैं।

शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी भौगोलिक स्थिति 27°21′ से 28°34′ उत्तरी अक्षांश एवं 74°41′ पूर्व से 76°06′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थिति है। इस प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 13,784 वर्ग किमी है। अध्ययन क्षेत्र में सीकर की नौ तहसीलें, झुझनू की आठ तहसीलें शामिल है शेखावाटी क्षेत्र के उत्तर–पूर्व में हरियाणा, पूर्व में मेवात क्षेत्र, उत्तर–पश्चिम जांगल प्रदेश, दक्षिण–पश्चिम में मारवाड़ क्षेत्र, दक्षिण–पूर्व में ढूँढाड़ (जयपुर), दक्षिण में अजमेर क्षेत्र पड़ता है। यहाँ का पूर्वी भाग में अरावली पर्वत तथा पश्चिम भाग में मरूस्थल का विस्तार है। यहाँ आन्तरिक अपवाह प्रणाली मौजूद है, कांतली यहाँ की मुख्य नदी हैं।

यहाँ अर्द्धशुष्क जलवायु पाई जाती है जिसमें स्टेपी प्रकार की वनस्पति मिलती है। जिसमें खेजड़ी बबूल, बैर, कैर इत्यादि यहा के मुख्य वृक्ष है। यहाँ गर्मियों के दिनों में दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम से गर्म हवाए चलती है जिन्हें 'लू' कहते है। इस क्षेत्र में मरूस्थल का विस्तार होने के कारण यहाँ भूरी रेतीली मिट्टी का विस्तार है जिसमें खरीफ के मौसम में बाजरा, मोठ, मूंग, ग्वार तथा रबी के मौसम में गेहूँ सरसों मैथी इत्यादि फसलें ली जाती है यहा वर्षा का वार्षिक औसत 25 से 50 सेमी तथा तापमान गर्मियों में अधिकतम 450 से 480 तक तथा सर्दियों में 40 से 60 से0 से नीचे चले जाते है। फतेहपुर (सीकर) तथा पिलानी (झुझनूँ) यहाँ के सबसे ठण्डे स्थान है।

मानचित्र संख्या – 2.1

शेखावाटी प्रदेश अवस्थिति मानचित्र

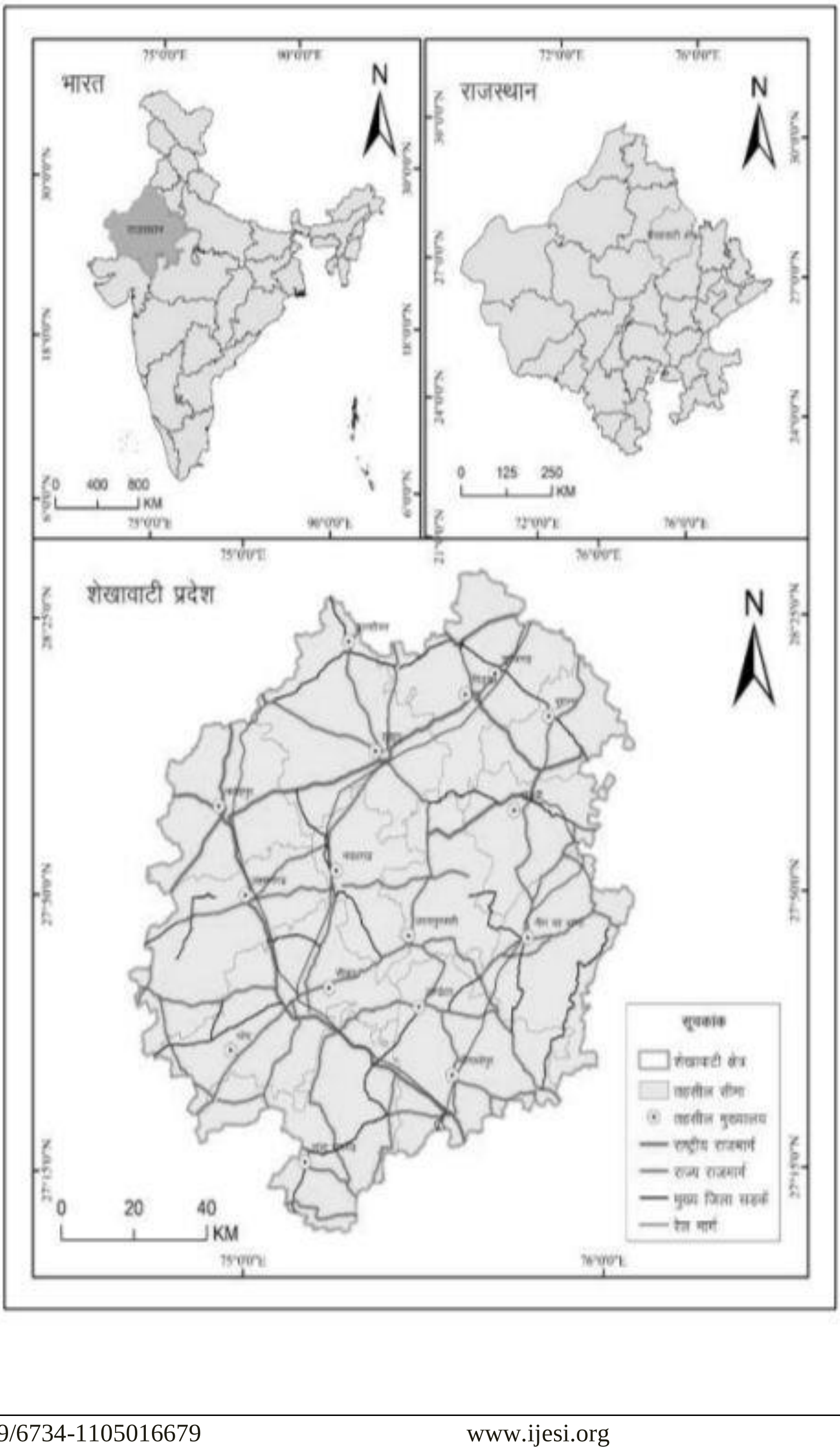

यहाँ से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या –11 (52) तथा 65 गुजरते है। इस क्षेत्र में झुंझनूँ जिले की कुल जनसंख्या 21,37,045, लिंगानुपात – 950, साक्षरता दर 74.13 प्रतिशत व जनघनत्व 361 प्रतिव्यक्ति तथा सीकर की जनसंख्या 26,77,737, लिंगानुपात– 944, साक्षरता दर 72.98 प्रतिशत व जनघनत्व 346 प्रतिव्यक्ति किमी. है।

शेखावाटी राजस्थान के स्टेपी मरूस्थल–प्रदेश में सम्मिलित है, जो अरावली श्रेणी के पश्चिम भाग में 300 मि.मी. से 500 मि.मी. वर्षा वाले क्षेत्र के उत्तर–पूर्व दिशा में विस्तृत है। यह प्रदेश उष्ण मरूस्थल प्रदेश की अपेक्षा चट्टानी मरूस्थल के बलुआ क्षेत्र में विलीन हो जाता है। स्टेपी मरूस्थल का उत्तरी–पूर्वी उत्थिल क्षेत्र अपेक्षाकृत कम बलुआ है, जिसमें पूर्वी सीकर एवं झुन्झुनूं की तहसीलें सम्मिलित की जाती है। यहाँ की तीव्र ढ़ालों पर प्रवाहित जल की लगातार बहाव क्रिया ने बालू–जमावों को कम कर भूमि को समतल कर दिया है, जहाँ अपेक्षाकृत मानव–बसाव अधिक केन्द्रित है।

ऐतिहासिक दृष्टि से शेखावाटी प्रदेश में सीकर व झुन्झुनूं जिले सम्मिलित किये जाते है। पिलानी के निकट नरहड़ में वि.स. 1215 के शिलालेख से स्पष्ट होता है कि यह प्रदेश अजमेर व बिसलदेव चौहान राजपूतों के शासन में था। पृथ्वीराज तृतीय की हार के पश्चात यह मुस्लिम शासकों के अधीन आ गया। आइन–ए–अकबरी के अनुसार फतेहपुर, झुन्झुनूं और नरहड़ अजमेर पूर्व के भाग थे। राव शेखाजी (1423–25) ने कछवाहों की शेखावत शाखा की स्थापना की जिसका केन्द्र उदयपुरवाटी (तोरावाटी) था। इस प्रदेश पर मिर्जाराजा जयसिंह का नियंत्रण था। झुन्झुनूं रियासत अन्त में 1949 में राजस्थान राज्य का अंग बन गयी।

शेखावाटी में पर्यटन विकास :–

राजस्थान ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए अध्ययन क्षेत्र में निम्न प्रकार से पर्यटन विकास की ईकाईयों को विकसित किया जा सकता है ।

गेस्ट हाउस

ग्रामीण इलाकों में 6 से 20 कमरों तक के गेस्ट हाउस बनाए जा सकते है। जिनमें पर्यटकों के ठहरने और खाने–पीने की सुविधा मिलेगी। इन गेस्ट हाउस में उसके मालिक या मैनेजर को अपने परिवार के साथ रहना जरूरी होगा। ताकि ट्यूरिस्ट्स को सुरक्षित माहौल और परिवार के साथ रहने का अनुभव मिल सके।

कृषि पर्यटन यूनिट

गाँव के खेतों में पर्यटकों को घुमाया जाएगा। उन्हें खेती–बाड़ी के तौर–तरीके समझाए जाएंगे। किस तरह की फसल होती हैं, कैसे उगाई जाती है, ऐसे बिंदुओं पर सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को साझा किया जाएगा।

कृषि पर्यटन यूनिट में निर्माण की भी परमिशन होगी। यह कृषि, व्यावसायिक और इंडस्ट्रियल जमीन पर कम से कम 2 हेक्टेयर इलाके में बनाई जा सकेगी। जमीन के 20 फीसदी हिस्से पर निर्माण करने की परमिशन होगी। बाकी की 80 फीसदी जमीन को ऊँट–घोड़ा फार्म, गौशाला, फसल उगाने जैसे गाँव के माहौल के हिसाब से काम में लिया जा सकेगा।

कैंपिंग साइट

कैंपिंग साइट के लिए भी कृषि, व्यावसायिक और इंडस्ट्रियल भूमि का उपयोग किया जा सकेगा। इसमें कम से कम 1 हेक्टेयर जमीन होना जरूरी है। कुल जमीन के 10 फीसदी हिस्से पर निर्माण करने की परमिशन दी जाएगी। बाकी जमीन के 80 फीसदी हिस्से को ऊँट फार्म, घोड़ा फार्म, फसल, पशुओं–मवेशियों को रखने, गार्डन बनाने, गाँव के परिवेश जैसे कामों के लिए काम में लिया जा सकेगा।

कैरावैन पार्क

पर्यटकों की मोबाइल वैन को पार्क करने के लिए कैरावैन पार्क भी बनाए जाएंगे। कम से कम 1 हेक्टेयर इलाके की खेती की जमीन, कॉमर्शियल और इंडस्ट्रियल लैंड पर ये पार्क बनाए जा सकेंगे। यहाँ पर्यटकों के लिए खाना पकाने, खाना खाने और अन्य सुविधाएं मुहैया कराने के लिए निर्माण की इजाजत होगी। कैरावैन वाहन पार्क करते समय वैन में पर्यटकों की मौजूदगी जरूरी होगी। राजस्थान में रेतीले जिलों या दूसरे जिलों में फार्म हाउस बनाकर ऊँट फार्म, घोड़ा फार्म, गीत–संगीत, लोक नृत्य के बीच इस तरह का माहौल बनाया जा सके।

राज्य सरकार ग्रामीण इलाके में पर्यटन को बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयासरत है। केन्द्र सरकार के स्वदेश दर्शन की थीम पर राजस्थान में गाँव–ढ़ाणियों में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने के पर्यटन विभाग लगातार कार्य कर रहा है। राजस्थान की पर्यटन नीति–2020 में भी ग्रामीण पर्यटन को बढ़ाना देने पर फोकस किया गया है। ग्रामीण इलाकों में पर्यटन को बढ़ावा देने से गाँवों की सभ्यता, संस्कृति पर कोई नकारात्मक असर न पड़े। इसके लिए स्कीम में

साफ एडवाइजरी जारी की गई है। ईको इलाकों में पर्यटन भवनों पर वन और पर्यावरण विभाग के सभी नियमों का सख्ती से पालन भी करवाया जाएगा।

'राजस्थान ग्रामीण पर्यटन प्रोत्साहन स्कीम' के तहत् पर्यटन गतिविधियों से जोड़ने पर गाँवों में निवेश होने से रोजगार बढ़ेगा, गाँव के लोगों की आमदनी बढ़ेगी, तथा पलायन भी रूकेगा। ढ़ाणियों और गाँवों की पहचान देश–दुनिया तक होगी। वहाँ का खान–पान, गीत–संगीत, लोक कला, पहनावा, बोल–चाल, लोकल हैंडीक्राफ्ट, मेहमान नवाजी केवल वहीं तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि दुनिया भर में पहचान बनेगी। सरकार को पर्यटन से मिलने वाले रेवेन्यू में भी बढ़ोतरी होगी।

'राजस्थान ग्रामीण पर्यटन प्रोत्साहन कार्यक्रम' का असली मकसद गाँवों में निवेश और रोजगार डवलप करना है। यहाँ के हैंडीक्राफ्ट आइटम और लोकल प्रोडक्ट्स को बचाना और उसका प्रचार कर उसे फैलाना है। सरकार चाहती है कि ग्रामीण पर्यटन विकसित होने से स्थानीय समुदाय की संस्कृति को लोग पहचान सकेंगे।

शेखावाटी आने वाले टूरिस्ट को गाँव में बुलाने के लिए चार गाँवों को टूरिस्ट के अनुसार पर्यटन गाँव के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहाँ गाँवों के माहौल की तरह बेड की जगह देशी पलंग उपलब्ध कराये जाएंगें।

कोरोना काल के बाद लोग प्रकृति की ओर बढ़ रहे हैं, इसलिए पर्यटन विभाग भी गाँव की ओर अपने कदम बढ़ा रहा है। गाँवों को पर्यटन गाँव घोषित किया जाएगा। वहाँ पर पर्यटन के लिए सुविधाएं विकसित की जा रही है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अब गाँवों में पर्यटन के द्वार खोले जाएंगे।

पर्यटन विकास में सरकारी प्रयास :–

- ★ सन् 1955 में पर्यटन निदेशालय की स्थापना।
- ★ सन् 1979 में राजस्थान पर्यटन विकास निगम की स्थापना।
- ★ किलों, पुरानी हवेलियों आदि में हेरिटेज होटल योजना की शुरूआत।
- ★ पर्यटन साहित्य के प्रचार व प्रसार की व्यवस्था।
- ★ दृश्यावलोकन की सुविधाऐं उपलब्ध करा कर पर्यटन स्थलों का भी विकास किया जा सकता हैं।
- ★ बड़े पैमाने पर पूर्ण सुविधाओं के साथ हाथी एवं ऊँटों पर सैर, मरू–मेलों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।
- ★ चयनित पर्यटन स्थलों जैसे सीकर, चूरू, झुन्झुनूं, आदि में 'पेइंग गेस्ट' की सुविधाएं उपलब्ध करायी गयी है।
- ★ ट्रेवल ऐजिन्सयॉ स्थापित कर परिवहन की सुविधा को आश्रमदायी बनाया गया है।
- ★ शाही रेलगाड़ी में पर्यटन स्थलों के भ्रमण की सुविधा उपलब्ध करवाई गयी है।
- ★ पैकेज ट्यूर कार्यक्रम जैसे मेवाड़ पैकेज शेखावाटी सर्किट, हवामहल पैकेज, गोल्डन ट्राईएंगल आदि निर्धारित है।
- ★ पर्यटन विकास के नए कार्यक्रम :
- ★ पर्यटन को उद्योग का दर्जा प्रदान करने के बाद इसके लिये स्वीकृत पूंजी विनियोजन पर 15 प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक सब्सिडी देने की घोषणा की गई है।
- ★ प्रसिद्व खाटूश्याम मन्दिर संरक्षण हेतु गन्दे पानी व सीवरेज निकास की योजना चालू की गई है।
- ★ राज्य में पुष्कर व दरगाह शरीफ के सर्वांगीण विकास की क्षेत्रीय योजना के साथ–साथ कैलादेवी, गोगामेड़ी, सालासर, रामदेवरा, देशनोक, मेहन्दीपुर के बालाजी आदि के नियोजित विकास के कार्यक्रम है।
- ★ राज्य में हेरिटेज होटलों की संख्या 60 से 100 तक बढ़ाई जा रही है।
- ★ पर्यटकों की सुविधा हेतु विमान सेवाओं का विस्तार किया जा रहा है।
- ★ सालासर, पिण्डवाड़ा, देवली, ढेंचू तथा ब्यावर में मिड–वे बनाये जा रहे हैं।

ऐसा अनुमान है कि प्रत्येक आठ विदेशी पर्यटकों और 32 स्वदेशी पर्यटकों पर राज्य में एक व्यक्ति को रोजगार प्राप्त होता है। अतः स्पष्ट है कि शेखावाटी क्षेत्र के लगभग 1.73 लाख लोगों को पर्यटन उद्योग से रोजगार प्राप्त हो रहा है।

उपर्युक्त प्रयास पर्यटन विकास में सहायक सिद्व हुए हैं लेकिन शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन–संस्कृति का रूप मुखरित नहीं हो पाया है। अतः इस दिशा में निरन्तर प्रयास करने की आवश्यकता है, जिससे पर्यटन इण्डस्ट्री का भविष्य उज्ज्वल बन सके।

पर्यटन उद्योग से संबंधित समस्याएँ :–

जटिल वीजा प्रक्रियाः ई–वीजा सुविधा शुरू करने के बावजूद अभी भी भारत में आने वाले अधिकांश पर्यटक और आगंतुक वीजा के लिये आवेदन करने की प्रक्रिया को काफी बोझिल और जटिल मानते है। महामारी के दौरान वीजा की यह प्रक्रिया और भी अधिक जटिल हो गई है।

अवसंरचना और कनेक्टिविटी का मुद्दाः प्रायः बुनियादी ढांचे की कमी और अपर्याप्त कनेक्टिविटी के कारण कई बार पर्यटकों को कुछ विरासत पर जाने के लिये कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिये बौद्धिक स्तर कंचनजंगा जैसे कई पर्यटन स्थल अभी भी आसानी से आम लोगों के लिये उपलब्ध नहीं है।

प्रचार और जागरूकता की कमी : यद्यपि बीते कुछ वर्षो में भारत के पर्यटन क्षेत्र के प्रचार में काफी वृद्धि देखी गई है, किन्तु अभी भी ऑनलाईन मचों पर भारत के पर्यटक स्थलों को लेकर प्रचार और जागरूकता की कमी स्पष्ट दिखाई देती है। पर्यटन का लोगों की परम्परागत जीविका पर दुष्प्रभाव पड़ सकता है। ग्रामीण आबादी कृषि और अन्य परम्परागत जीविका माध्यमों की बजाए पर्यटन से सम्बध आकर्षक जीविका माध्यमों में स्थानान्तरित हो सकती है। इससे ग्रामीण पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

सुधार की सम्भावनाएँ :–

जीवन की प्रत्येक पहलू के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष होते हैं। स्थायी विकास के लिये यह जरूरी है कि रचनात्मक प्रभाव अधिक हों और नकारात्मक प्रभाव कम पड़ें। यही बात ग्रामीण पर्यटन पर भी लागू होती है। पर्यटक ग्रामीण क्षेत्रों में सहज महसूस करें, इसके लिये उन्हें गन्तव्य स्थान के बारे में पहले से ही विस्तृत जानकारी प्रदान की जा सकती है। उन्हें किसी क्षेत्र में प्रचलित विशेष रीति–रिवाजों की भी जानकारी दी जा सकती है। ताकि वे तदनुरूप अपने को तैयार कर सकें।

गाँवों में बुनियादी ढाँचा और लॉजिस्टिक सुविधाएँ मुहैया कराने की आवश्यकता है। निकटतम रेलवे स्टेशन या राजमार्ग को जोड़ने वाली सड़कों की व्यवस्था से गाँवों तक पहुँच में सुधार किया जा सकता है। इससे पर्यटकों के साथ–साथ ग्रामवासियों को रोजगार के अवसर मुहैया करा सकें। यहीं वजह है कि देश के प्रधानमंत्री से लेकर दुनिया के अन्य देश पर्यटन को बढ़ावा देने की कोशिशों में लगे हुए हैं।

वर्तमान में पर्यटन विभाग की कोशिश टूरिस्ट को उन जगहों की ओर खींचना है, जिनके बारे में या तो कम लोग जानते हैं या फिर जहाँ पर सुविधाओं के चलते नहीं जाते है। इस कड़ी में राजस्थान का पूर्वोत्तर भाग शेखावाटी का वह कोना है, जिसकी ग्रामीण खूबसूरती से अभी तक टूरिस्ट रूबरू नहीं हुए हैं। नॉर्थ ईस्ट को टूरिस्ट स्पॉट के रूप में विकसित करने की दिशा में सरकार लगातार काम कर रही है।

सांस्कृतिक व कलात्मक धरोहर का संरक्षण व सदुपयोग–पर्यटन का विकास करने से सांस्कृतिक आदान–प्रदान के अवसर बढते हैं। लोगों का मानसिक क्षितिज विस्तृत होता है। राज्य में शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियों में दीवारों पर बनी चित्रकारी ने पर्यटकों को काफी आकर्षित किया है। झुंझुनूं जिले के नगर (महणसर) ग्राम की हवेली के भीतरी भाग की सोना–चाँदी की हवेली की मनोरम चित्रकारी प्रसिद्व है। नवलगढ़ में कई करोड़पतियों की हवेलियाँ पर्यटकों के लिए देखने लायक है। शेखावाटी में शाकम्भरी, लोहार्गल, महनसर, नवलगढ़, मंडावा, खेतड़ी, अलसीसर व मलसीसर का पर्यटन सर्किट बनेगा। इन क्षेत्रों को आपस में जोड़ा जा रहा है।

इनमें मेरों की हवेली, पोदारों, सेखसरिया, भगत, मानसिंहका, छावछरिया आदि की हवेलियों में आकर्षक रंगों में मनमोहक चित्र अंकित हैं। इन चित्रों में झाँकता जीवन अत्यंत रोचक प्रतीत होता है। हालांकि ये हवेलियाँ आज सूनी पड़ी हैं, क्योंकि इनके ज्यादातर सेठ–साहूकार लोग बड़े नगरों में बए गए है, लेकिन यहाँ से उनका सम्पर्क आज भी बना हुआ है। इसी प्रकार अन्य कस्बों जैसे मण्डावा आदि की हवेलियाँ में बने चित्र व उनके बाहरी दृश्य पर्यटकों को लुभावने लगते है।

शेखावाटी क्षेत्र की ये हवेलियाँ आज भी वास्तविक धरोहर का अहसास कराती है, आज भी शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन विकास में इनकी अहम भूमिका है। विभिन्न नगरों में महल, किले व अन्य इमारतें, आदि पर्यटकों को अपनी ओर निरन्तर खींचते रहते हैं। यहाँ के मेलों, त्यौहारों, उत्सवों, नृत्य व संगीत के कार्यक्रमों को देखकर विदेशी पर्यटक अत्यंत हर्षित होते हैं। लोक कलाकारों को विशेष कठपुतली के खेल आदि में अपनी प्रतिभा व दक्षता दिखाने तथा उन्हें विकसित करने का अवसर मिलता है। जैसलमेर का मरू–मेला काफी अद्भुत किस्म का माना गया है। जो प्रतिवर्ष काफी पर्यटकों को आकर्षित करता है। इस महोत्सव की छाप शेखावाटी प्रदेश पर भी दिखाई देती है।

अतः आज भी शेखावाटी क्षेत्र 'सांस्कृतिक पर्यटन' में योगदान दिए हुए है। पर्यटन के आधुनिक रूप जैसे अवकाश–पर्यटन, ऊँट–सफारी जिसमें ऊँट पर पर्यटकों का भ्रमण आयोजित किया जाता है। वन्य जीव संेचुरी या अभ्यारण्यों जैसे

तालछापर, मंडावा, केमल सफारी, खण्डेला की पहाड़ियाँ आदि प्रमुख है। नेशनल पार्को का विकास भी तेजी से हो रहा है। शेखावाटी क्षेत्र में कुछ सीमा तक 'डेजर्ट सफारी' का विकास किया जा सकता है, इन क्षेत्रों में शामिल है–लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर, रामगढ़–शेखावाटी आदि है।

शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन का कई दृष्टियों से महत्व है, लेकिन राजस्थान में विदेशी मुद्रा के अभाव में इसी पक्ष पर विशेष बल दिया जाना जरूरी है। अतः शेखावाटी में पर्यटन का विकास करके अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का प्रयास करना चाहिए। इससे रोजगार के साधन बढ़ेगे सड़क, परिवहन और संचार आदि का विकास होने से कई प्रकार के उद्योगों को पनपने का अवसर मिलेगा। पर्यटकों के व्यय से प्रत्यक्ष विदेशी मुद्रा प्राप्त होगी। उनके द्वारा मिलने वाले निर्यात ऑर्डरों से निर्यात–संवर्द्धन भी होगा। सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्व के स्थानों के रख–रखाव व उनके आसपास के स्थानों को सुधारने का अवसर मिलेगा। इससे शेखावाटी क्षेत्र को कई प्रकार के लाभ प्राप्त होगें। पर्यटन विकास से रोजगार, आय, क्षेत्रीय विकास, अवसंरचनात्मक विकास आदि में मदद मिलती है। इस प्रकार पर्यटन भी विकास में अपना योगदान देता है।

सांस्कृतिक पर्यटन–के माध्यम से शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन के विकास की काफी सम्भावनाएँ हैं। जिनका पर्याप्त उपयोग किया जाना चाहिए ताकि पर्यटन यह उद्योग शेखावाटी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में योगदान दे सकें। शेखावाटी क्षेत्र आज भी 'सांस्कृतिक पर्यटन' के विस्तार का क्षेत्र हैं। शेखावाटी में विभिन्न प्रकार की संस्कृति का संगम दिखाई देता है। शेखावाटी क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर बड़ी सम्पन्न है। शेखावाटी के प्राचीन किले, महल, धार्मिक स्थल, हवेलियाँ, अन्य भवन तथा इमारतें प्रसिद्ध है। जो लोक नृत्य, संगीत और दस्तकारी पर्यटन के विकास को सुदृढ आधार प्रदान करते हैं। 'पुरात्तव विभाग' द्वारा इन ऐतिहासिक स्थलों की सुन्दरता बढ़ाने के प्रयास किये जाने चाहिए। मंडावा में पुरानी हवेलियों का सांस्कृतिक, धार्मिक व पर्यटन की दृष्टि से काफी महत्व है। यहाँ प्रति वर्ष दूर–दूर से काफी संख्या में लोग आते हैं। जिसके कारण वर्ष भर चहल–पहल बनी रहती है।

शेखावाटी के लोक कलाकारों को प्रोत्साहन देकर उनकी परम्परागत कलाओं व प्रतिभाओं को संरक्षण दिया जा सकता है। दूसरी ओर पर्यटन को भी विकसित किया जा सकता है। पर्यटन को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने के लिए निजी व सार्वजनिक कला केन्द्रों का विकास किया जाना चाहिए। जिससे दोनों क्षेत्रों की भागीदारी सुनिश्चित हो सकें।

शेखावाटी क्षेत्र की समृद्ध–सांस्कृतिक–विरासत में मेलों व त्यौहारों का महत्वपूर्ण स्थान है। पर्यटन विभाग ने वर्ष 2011 तक अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार–प्रसार के लिए निम्नलिखित मेलों व त्यौहारों का कलैण्डर तैयार किया है जिसका ब्यौरा इस प्रकार हैः–

नागौर मेला, नागौर

- मरू मेला, जैसलमेर
- हाथी त्यौहार, जयपुर
- मेवाड़ त्यौहार, उदयपुर
- गणगौर त्यौहार, जयपुर
- खाटू श्याम मेला, सीकर

इन मेलों व त्यौहारों में संस्कृति की छाप स्पष्ट रूप से झलकती है।

सभाओं या सम्मेलनों के आयोजनों के माध्यम से पर्यटन के विकास की सम्भावनाओं का उपयोग किया जा सकता है। वर्तमान में राजनीतिक, व्यावसायिक और शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में विभिन्न संगठन अपने वार्षिक सम्मेलन आयोजित करते हैं। इसके लिए सभागारों की आवश्यकता होती है। जिनकी स्थापना को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। इसके लिए प्रायः होटलों में उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग किया जाता है। लेकिन इसके लिए वह पर्याप्त नहीं है। शेखावाटी क्षेत्र का राजस्व राजस्थान में सर्वाधिक है, जिसके माध्यम से पर्यटन इण्डस्ट्री को बढ़ाया जा सकता है।

अतः जयपुर में बिड़ला सभागार की भांति अन्य स्थानों में केन्द्रों की स्थापना से भी इस दिशा में मदद मिल सकती है। शेखावाटी क्षेत्र के झुन्झुनूं व सीकर आदि स्थानों पर भी आधुनिक सभागार स्थापित करने की सम्भावनाएँ हैं। इससे भी पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा। सम्मेलनों में आने वाले व्यक्तियों को दर्शनीय स्थानों को देखने का अवसर मिलेगा और इन स्थलों का विकास भी हो होगा।

पर्यटन को व्यवस्थित तरीके से विकसित करने की जरूरत : –

देश आजाद होने के बाद से पर्यटन बेहद अव्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ा हैं। इससे मुनाफा हर कोई कामना चाहता है लेकिन जवाबदेही कोई नहीं सुनिश्चित करना चाहता है। इसकी क्वालिटी से यह कहना है सिविका ट्रैवल्स के

ओनर सुनील सत्यवक्ता का वे कहते हैं कि देश में इंजीनियरिंग से लेकर मेडिकल और में नेजमेंट के अनगिनत कॉलेज मिल जाऐगें। हमें यहीं से बेहतर शुरूआत की आवश्यकता है। यहीं से हमें टूरिज्म के लिए पढ़े–लिखे गाइड से लेकर अच्छे ट्रांसलेटर और आंत्रपेन्योर मिलेंगें।

जो इस इंडस्ट्री को बेहतर तरीके से आगे ले जाएंगें, हमारे देश में साइंस से लेकर रिलीजन, वाइल्डलाइफ समेट अन्य फील्ड में टूरिज्म की असीमित संभावनाएं हैं, जो न सिर्फ रोजगार के अवसर पैदा करेंगें। बल्कि दुनियाभर में देश का नाम भी ऊँचा करेंगें। विश्व की सबसे बड़ी डेमोक्रेसी में चुनाव कैसे होते है, हम यह दुनियाभर के टूरिज्म को क्यों नहीं बता सकते है। इसकी बारीकियों को समझाना कितना आसान है। कहने का मतलब साफ है, जब इसमें प्रोफेशनल्स आएंगें तो इस टूरिज्म में रोजगार के रास्ते खुलेंगें।

अब जम्मू–कश्मीर को ही ले लीजिए। अनुच्छेद 370 हटने के बाद हर किसी कि निगाहें अब वहाँ पर हालात सामान्य होने पर लगे हैं, क्योंकि हर कोई जानता है कि कश्मीर उस जन्नत का नाम है, जिससे मिलने को हर कोई बेताब है। पर्यटन से ग्रामीण लोगों में नये विचार सृजित होंगें। इससे शिक्षा, निवारक स्वास्थ्य देखभाल, आधुनिक उपकरणों आदि के प्रति लोगों की रूचि बढ़ेगी। इससे साक्षरता का सर्वत्र प्रसार करने में मदद मिलेगी।

अधिकाधिक पर्यटकों द्वारा गाँवों की यात्रा करने से सड़कों के माध्यम से सम्पर्क में सुधार आएगा। सार्वजनिक परिवहन में बढ़ोत्तरी होगी। अभ्यारण्यों और सुरक्षित उद्यानों के निकट रहने वाले ग्रामीण अपने शहरी सहभागियों को प्रकृति के संरक्षण की शिक्षा दे सकते हैं। सदियों से प्रकृति की शरण में रहने के कारण उन्हें प्रकृति के संरक्षण के तौर–तरीकों की जानकारी निश्चित रूप से अधिक होती है। पर्यटक स्थानीय धार्मिक और परम्परागत अनुष्ठानों में रूचि विकसित कर सकते हैं, जो सामाजिक सद्भाव के प्रेरक के रूप में काम कर सकती है।

विशेष पर्यटन अंचल :–

वर्ष 2017–18 के आम बजट में 5 विशेष पर्यटन अंचलों की घोषणा की गई, जहाँ राज्यों की भागीदारी के साथ विशेष प्रयोजन उद्यमों की स्थापना की गई। इससे दूसरे वैश्विक अतुल्य भारत अभियान की शुरूआत करने में मदद मिलेगी, ताकि आकर्षक पर्यटन लक्ष्य के रूप में भारत की स्थिति सुदृढ़ की जा सकें।

प्रत्यक्ष पर्यटन क्षेत्र से बाहर, अप्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध नौकरियाँ कोई कम लाभकारी नहीं हैं। स्थानीय क्षेत्रों में टैक्सी या आश्रमदेय गाड़ियाँ चलाना, गाइड या दुभाषिया की व्यवस्था, लोक कलाकारों, शिल्प विक्रेता, अन्य वित्तीय सेवा, विनियम, खेलों और फोटो खींचने के लिए सामान की आपूर्ति करना आदि से संबंधित है। अतिरिक्त नौकरियाँ, लांड्री और सिर्फ पर्यटकों को माल बेचने वाली दुकानों, प्रसाधन वस्तुओं या कॉस्मेटिक वस्तुओं में भी उपलब्ध होती है।

यह कहना उचित है कि पर्यटन न तो अकेला ओर न ही विशिष्ट प्रकार का विशेष स्थल पर स्थित उद्योग होता है। यह मेजबान की सेवाओं का समग्र होता है। यह किसी भी माध्यम के जरिये पर्यटक द्वारा पर्यटन के बारे में जानकारी इक्ट्ठा करने से ही प्रारंभ हो जाता है। प्रचार सेवाऐं मेजबान देश के टूर प्रचालकों द्वारा चलाई जाती हैं। इससे पर्यटकों को अपने पसंद के स्थानों पर जाने की योजना तैयार करने में मदद मिलती है।

प्रशिक्षित प्रधान रसोइयाँ और अन्य पेशेवर होटलों में पर्यटकों की निवास के दौरान सुविधा की देखभाल करते हैं। मार्गदर्शक की सेवायें पर्यटक स्थलों को दिखाने की जिम्मेदारी निभाती हैं। ग्राहक सेवा के रूप में विक्रय कला कोई कम महत्व की नहीं है। यह सेवा सज्जा या सजावटी कलात्मक वस्तुएं इत्यादि आती हैं जिसे पर्यटक उपहार या अपने उपयोग के लिए खरीदता है।

बहुमुखी सेवा उद्योगों का ऐसा विकास बहुत कम लागत वाला है और आर्थिक गतिविधि के रूप में संचालित करने में बहुत आसान हैं। ऐसे उद्योग के संचालन के लिए सर्वाधिक बड़ा संसाधन मानवीय कुशलता और सृजनात्मक कौशल है। इसकी तुलना में कृषि या निर्माण द्वारा क्षेत्र के विकास के लिए बड़ी पूँजी की आवश्यकता होती है। समय के साथ, पर्यटन को जिन बुनियादी ढाँचों की आवश्यकता होती है, उसके विकास में वह स्वतः योगदान देने लगता है। परिवहन के साधन संचार तंत्र, बिजली की लाईनें, जनरेटर सेट, ट्रांसफॉर्मर या जल भंडारण टैंक इत्यादि स्थानीय पर्यटक क्षेत्र के भीतर विकसित होने लगते है।

उद्योग के रूप में पर्यटन एक और पर्यटकों को आकर्षित करते हुए अपनी मांग उत्पन्न करता है। दूसरी ओर वह अन्य कई उद्योगों के लिए बाजार प्रदान करने लगता है। पर्यटन की बढ़ती हुई माँग से कृषि, निर्माण उद्योग, सड़क व इमारत निर्माण कार्य इत्यादि को बढ़ाता मिलता है। किसी क्षेत्र में होटल और मोटलों का ज्यादा खुलने का अर्थ है एक के बाद एक अंत संबंधित सेवा उद्योगों की संख्या में गुणात्मक वृद्धि। पुराने स्मारकों को देखने जाना, ऐतिहासिक महत्व की मशीन (इंजन) का निर्माण करना भी आज विरासत उद्योग के अंतर्गत आता है। यह नाम उपयुक्त है क्योंकि हम इससे वैसे ही उर्पाजन करते हैं, जैसे हम किसी भी अन्य औद्योगिक उत्पाद की बिक्री से करते है।

यह विज्ञापन ब्यूरो और दृश्य मीडिया के कार्य के अवसरों को विस्तृत करता है। साथ ही ज्यादा संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए सरकारी पर्यटन विभाग की मदद करता है। उस क्षेत्र के लोगों के लिये अतिरिक्त आय एवं नौकरी के नये साधनों को सृजित करते हैं। ये दोनों ही परिणाम उस क्षेत्र के विकास के कारक बन जाते हैं। एक अनुमान के अनुसार, देशी पर्यटन के विकास के लिए सामान्यतया 10 लाख रूपये का विनियोग अकेले होटल क्षेत्र में 89 नौकरियाँ सृजित करता है। इसकी तुलना में इतनी ही लागत कृषि क्षेत्र में सिर्फ 45 रोजगार और औद्योगिक निर्माण क्षेत्र में 13 रोजगार उत्पन्न करता है।

जब पर्यटक सेवाओं के तंत्र का विकास होता है, तो स्व नियुक्त लोगों की सुंख्या बढ़ जाती है। इसके लिए सामयिक या मौसमी रोजगार वितरण पर्यटक रूचि के स्थानों के आसपास के समस्त क्षेत्र में व्यापक हो जाता है। इसकी तुलना में भ्रमण एवं पर्यटन में हो रही वृद्धि दोगुनी तेज है। प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में विश्व की सर्वाधिक आर्थिक वृद्धि हो रही है। अब हमारा ध्यान इस ओर चला गया हैं। उसकी सराहनीय वृद्धि भारत से अब ज्यादा दूर नहीं है। यह अकाट्य तथ्य है कि पर्यटन क्षेत्र में अकेले 10 लाख नियमित नौकरियाँ इतनी वित्तीय आय सृजित करती है कि भारत के महँगें पेट्रोलियम उत्पादों के पूरे वर्ष भर के बिल की 40 प्रतिशत अदायगी कर सकती है। पर्यटन से विदेश विनियम उपार्जन इस बिल का अतिरिक्त भुगतान करेगा।

आर्थिक गतिविधि के रूप में, आधुनिक पर्यटन की व्यापारिक प्रकृति ने उसे सेवा उद्योगों के अंतःसंबंधित समूह में रूपान्तरित कर और भी विस्तारित किया है।

वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, आकस्मिक एवं नियमित नौकरियाँ, प्रदान करते हैं। होटलों और इससे जुड़े क्षेत्रों और स्व नियुक्त लोगों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। अतः वे सभी एक दूसरे की वृद्धि की बुनियाद रखते हैं।

भारत में पर्यटन उद्योग, हमारे विदेशी विनियम उपार्जन में तीसरा सर्वाधिक बड़े हिस्सों के लिये जिम्मेदार है। यह आयात्ति पेट्रोल ओर पेट्रोलियम उत्पादों को हमारे वार्षिक बिल का 40 भुगतान कर सकता है।

अल्पविकसित क्षेत्रों का विकास :—

भारत के निर्यात उद्योग की तरह विदेशी आगन्तुकों का हमारे देश में भ्रमण पर्यटन के विकास का आधार है। यात्रियों को उत्पादों और सेवाओं की बिक्री के द्वारा आर्थिक गतिविधि का स्तर बढ़ता है। वृहत स्तर पर प्रत्येक स्थानीय क्षेत्र अपने हस्तशिल्पकला की किसी वस्तु के लिये प्रसिद्व होता है जो पर्यटकों का ध्यान खींच लेता है। जितनी ज्यादा वस्तु के लिये प्रसिद्व होता है, उतना ही ऐसी विविध वस्तुओं की बिक्री के लिये मांग अधिक होती है। अतः यह स्थानीय क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि करती है। यह लाभ देश के अन्दर तुलनात्मक रूप से अल्पविकसित क्षेत्रों के लिये विशेष लाभकारी होता है।

गैर—औद्योगिक या आंशिक रूप से औद्योगिक क्षेत्रों में काश्तकारों की जनसंख्या अधिक होती है जो जीवन निर्वाह स्तर की खेती करते हैं। वहाँ वैकल्पिक संसाधनों का सामान्य रूप से अभाव होता है। जिससे के इस प्रकार के क्षेत्रों में उत्पादन आर्थिक गतिविधि की कमी होती है। ऐसे क्षेत्र भारत के चारों ओर विभिन्न आकारों में फैले है।

विदेशी पर्यटकों द्वारा उनके ठहरने के दौरान व्यय किए गए धन की मात्रा का कुछ भाग स्थानीय निवासियों की आय के प्रत्यक्ष स्त्रोत है। आगन्तुकों द्वारा व्यापारिक लोगों को अदा किया गया पैसा, उनकी सेवाओं के लिये कार्य कर रहे कार्यकर्त्ताओं की मजदूरी बन जाता है। पर्यटन का विकास युवा बेरोजगार लोगों को कम से कम मौसमी रोजगार प्रदान करता है। स्त्रियों तथा बुजुर्ग लोगों को गौण रोजगार प्रदान करता है। हस्तशिल्प कला का पुनरूत्थान होता है। घरेलू स्तर पर ऐसी वस्तुओं की सूची बहुत लम्बी है। बहुत साधारण दिखाई पड़ने वाली वस्तुएं भी पर्यटकों में रूचि जगाती है। यह वस्तुएं पर्यटक बाजारों में अच्छे लाभांश पर तेजी से बिकती है।

इन क्षेत्रों से युवाजन सामान्यतः नौकरी की तलाश में शहरी केन्द्रों की ओर जाते हैं। समयोपरि स्थानीय रूप से उत्पादित वस्तुओं की बिक्री और आने वाले पर्यटकों की सेवाओं के लिये सृजित नौकरियाँ, अल्पविकसित स्थानों से युवा के प्रवाह को रोकती है। पर्यटन विनियोजकों, भूस्वामियों और बैंकों के लिये आय के नये स्त्रोत सृजित करता है। यह सरकार के लिये ज्यादा करों की गुंजाइश में वृद्धि करता है। यह तीव्र गति से होता है जब पर्यटन सैरगाहों (रिजोर्ट) का नवीनकरण या इमारत निर्माण के प्रोजेक्ट शुरू किये जाते हैं। सार्वजनिक एवं निजी दोनों स्त्रोतों से पैसा आने लगता है।

बैंक ऐसे जोखिम कार्य करने के लिये ऋण में वृद्धि करने का निर्णय कर सकते हैं। यह धन या पूँजी संसाधन पहले कुछ अत्यधिक औद्योगिक क्षेत्रों में केन्द्रित थे। इस तरह वे अल्पविकसित क्षेत्रों की ओर हस्तान्तरित होना शुरू हो जाता है। अर्थव्यवस्था का विकास मनोरंजन पर्यटन, द्वारा राष्ट्रीय स्तर से निम्न क्रम के क्षेत्रों ओर स्थानीय स्तरों तक पहुंचने लगता है। यह प्रवृत्ति दीर्घकाल में विकास के क्षेत्रीय असंतुलन को काफी हद तक ठीक करती है।

आय और नौकरियों के नये स्त्रोतों का सृजन पर्यटन उद्योग के सामान्य फायदे हैं। परन्तु यह स्थानीय अर्थव्यवस्था की क्षमता बढ़ाने और देश के अल्पविकसित क्षेत्रों में कई तरह से जीवन की गुणवत्ता का स्तर बढ़ाने में विशेष भूमिका भी अदा करता है।

2021–22 के बजट में पर्यटन के विकास के कार्यक्रम –

कोरोना में पर्यटन क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुआ है. कोरोना से बेपटरी हुए पर्यटन को उबारने के लिए बजट में कई बड़ी घोषणाएं की गई हैं, जिसमें

- आगामी वर्ष के लिए 500 करोड़ रुपए का पर्यटन विकास कोष बनाया जाएगा। इसमें 200 करोड़ रुपए प्रदेश के टूरिस्ट डेस्टिनेशन के प्रचार के लिए तो 300 करोड़ रुपए आधारभूत सरंचना और निवेश आदि पर खर्च किए जाएंगे,
- जैसलमेर में सम रोड पर 3500 बीघा में ढोला मारु टूरिस्ट कॉम्पलेक्स बनाया जाएगा। इसी कॉम्पलेक्स में राजस्थान फॉल्क आर्ट ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट बनाया जाएगा।
- कलाकार कल्याण कोष 15 करोड़ का बनाया जाएगा।
- फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति लागू की जाएगी। राजस्थानी फिल्म को 25 लाख रुपए की सहयोग राशि और ैळैज् पर 100ः छूट दी जाएगी।
- सिंगल विंडो क्लीयरेंस सिस्टम लागू किया जाएगा।
- 30 मार्च को सभी जिलों में राजस्थान उत्सव मनाया जाएगा।
- 'नेहरू यूथ कल्चरल एक्स्पोजर प्रोग्राम' आयोजित किए जाएंगे।
- ''गौडवाड़ (पाली, जालौर, बाड़मेर, सिरोही) व शेखावाटी पर्यटन सर्किट विकसित किये जाएंगे।
- शेखावाटी पर्यटन सर्किट में लोहार्गल, शाकम्भरी माता मंदिर, हर्षनाथ पहाड़ी, जीणमाता मंदिर, नवलगढ़ डूंडलोद, मंडावा, लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर, रामगढ़ शेखावाटी, महनसर, अलसीसर, मलसीसर, खेतड़ी सम्मलित किए जायेंगे, इसके अलावा सीकर में अरबन हाट के विकास की घोषणा की गई है।
- सर्वधर्म समभाव को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख हिन्दू, जैन, सिख व मुस्लिम तीर्थ स्थलों के धार्मिक पर्यटन सर्किट विकास हेतु 89.33 करोड़ रुपये व शेखावाटी पर्यटन सर्किट के विकास हेतु 36.3 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट स्वीकृत।
- पर्यटन सूचना केंद्र सीकर को पर्यटक स्वागत केंद्र के रूप में विकसित किया जाएगा।
- शेखावाटी पर्यटन मेला शुरू करने की रूपरेखा तैयार
- फतेहपुर में दो दिवसीय शेखावाटी पर्यटन मेला पुनः शुरु करने के लिए दो दिवसीय कार्य योजना तैयार की गई है। इस दो दिवसीय मेले में हैरिटेज वॉक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगें, ताकि पर्यटकों का दर्शनीय स्थल से जुड़ाव हो सके। इसके साथ ही खाटूश्यामजी में तीन हजार गाडियों की पार्किंग स्थल विकसित करने और सीकर की तरह लक्ष्मणगढ़ में स्मृति पार्क विकसित करने ,धार्मिक स्थल गणेश्वर व टपकेश्वर पर्यटन स्थलों सहित फतेहपुर, रामगढ़ शेखावाटी की हवेलियों के विकास के लिए भी प्रस्ताव तैयार कर भिजवाए गए हैं। जिसके तहत पर्याप्त रोशनी, शौचालय, पीने के लिए शुद्ध पानी, अतिक्रमण हटाने का कार्य, साफ–सफाई, मरम्मत कार्य, सुगम आवागमन, रंग–रोगन इत्यादि कार्य करवाये जायेंगें। शेखावाटी पर्यटन सर्किट के लिए मंजूर किए गए 475 लाख रुपयों की राशि से पर्यटकों के लिए आधारभूत सुविधाओं का विकास जैसे कार्य वहाँ की नगर पालिकाएँ व राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड के माध्यम से होंगे। इसके बाद यह पर्यटक स्थल पहले से ज्यादा आकर्षित हो जाएँगे। सुख सुविधाओं का विस्तार होगा, पहले से ज्यादा पर्यटक आएँगे तो लोगों को रोजगार भी मिलेगा।
- पाली के रणकपुर क्षेत्र, सोनाणा खेतलियाजी मंदिर, जवाई क्षेत्र व बाली दुर्ग, जालोर के सुंधा माता व जालोर दुर्ग, बाड़मेर के आसोतरा, सिरोही के अर्बुदा धाम, अधरदेवी, अचलगढ़, मारकुंडेश्वर धाम, अम्बेश्वर जी व भैरूतारक धाम आदि स्थानों को गौडवाड़ पर्यटन सर्किट के रूप में विकसित किया जाएगा, मिड–वे इकाइयों का जिर्णोद्धार किया जाएगा। आरटीडीसी संचालित मिड–वे यात्रियों में काफी लोकप्रिय रहे थे, ऐसे में 7 महत्वपूर्ण मिड–वे इकाइयों बर–पाली, बहरोड़ अलवर, रतनगढ़ चूरू, पोकरण जैसलमेर, फलोदी जोधपुर, देवगढ़ राजसमंद और शाहपुरा जयपुर का 10 करोड़ रुपए की लागत से जीर्णोद्धार कर सुचारू रूप से संचालित किया जाएगा। वहीं राज्य में सर्वधर्म सदभाव को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख हिन्दू तीर्थ स्थल चारभुजा, नाथद्वारा राजसमंद, गौतम ऋषि मंदिर सिरोही, पुष्कर अजमेर, कोलायत बीकानेर, खाटू श्याम जी मंदिर सीकर, मेहंदीपुर बालाजी दौसा, डिग्गी कल्याणजी टोंक, प्रमुख जैन तीर्थ स्थल तिजारा अलवर, श्रीमहावीर जी करौली, चमत्कारजी सवाईमाधोपुर, बाड़ा पदमपुरा, सांगानेर जयपुर, देलवाड़ा, अचलगढ़, माउंट आबू सिरोही, रणकपुर पाली, चाँदखेड़ी खानपुर झालावाड़, प्रमुख सिख तीर्थस्थलों बुड्ढा जोहढ़ श्रीगंगानगर, नारायला खालसा हेरिटेज कॉम्प्लेक्स जयपुर, पुष्कर अजमेर, गुरुद्वारा श्री कलगीधर बागौर साहिब व मांडल भीलवाड़ा शामिल है।

- इसके अलावा प्रमुख मुस्लिम तीर्थस्थल सरवाड़ दरगाह अजमेर, दरगाह तन्हा पीर मंडोर जोधपुर, दरगाह कपासन चितौड़, हमीमुद्दीन दरगाह नागौर, मिठ्ठेशाह दरगाह झालावाड़, नरहड़ की दरगाह झुंझुनूं, हकीम साहब की दरगाह सीकर, मीर कुर्बान अली, दरगाह चार दरवाजा व दरगाह सांभर और जयपुर के धार्मिक पर्यटन सर्किट बनाए जाएंगे, इस पर 100 करोड़ रुपये की लागत आएगी।
- राजस्थान में पर्यटकों के आकर्षण और मनोरंजन के लिए पुष्कर अजमेर स्थित होकर में 90 हैक्टेयर व सूरज कुंड में 150 हैक्टर में टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स के लिए बहुउद्देश्यीय योजना शुरू की जाएगी। देशी–विदेशी पर्यटकों की पसंदीदा जगह जैसलमेर में टूरिस्ट को बढ़ावा देने के लिए ढोलामारु टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स की भी घोषणा की गई. यह कॉम्प्लेक्स मूल सागर, अमर सागर, सम रोड़ पर लगभग 3 हजार 500 बीघा में बनाया जाएगा। इसमें पर्यटकों के आकर्षण व मनोरंजन के लिए रिपोर्ट, मोटल, फॉर्म हाउस आदि स्थापित किए जाएंगे, साथ ही इसी कॉम्प्लेक्स में राजस्थान फोक एंड आर्ट इंस्टिट्यूट की स्थापना की जायेगी।
- धार्मिक स्थलों में लक्ष्मणगढ़ सीकर के धार्मिक पर्यटन स्थल सांगलपत्ती आश्रम, कुमास जागरी, गुलाबजति आश्रम गाड़ोदा, गोसाईं मंदिर कटेवा, गोविंद नाथजी का आश्रम हुंडवा, भक्त शिरोमणि कर्माबाई के मंदिर घस्सू का बास सहित अन्य के विकास कार्य करवाए जाएंगे। साथ ही पांचोता कुंड नावा, घाट की गुणी जयपुर, सर्वेश्वर मंदिर स्थल बांसवाड़ा, राजा मोरध्वज नगरी गढ़मोर टोडाभीम, जोगणिया माता बेगूँ चितौड़गढ़, बिजवा माता मंदिर मोदपुर व बर्लेश्वर नीमकाथाना आदि पर्यटन स्थलों के विकास कार्य करवाये जाएँगे।
- प्रदेश में डे टूरिज्म, ग्रामीण टूरिज्म, ट्राइबल टूरिज्म व एडवेंचर टूरिज्म को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वीआबिलिटी गेप फडिंग योजना लाई जाएगी, इसके अलावा छोटे पर्यटक खींचन, खेजड़ली ओसियाँ, जोधपुर, भानगढ़, अलवर, सांभर, सामोंद, जयपुर सहित अन्य स्थलों को विकसित करने और मुख्य पर्यटक स्थलों को जोड़ने के लिए लग्जरी टूरिस्ट वाहनों का संचलन किया जाएगा।
- प्रदेश के कलाकारों की सहायता के लिए कलाकार कल्याण कोष में 15 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, राजस्थान को फिल्म डेस्टिनेशन के रूप में प्रमोट करने और राजस्थानी फिल्मों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति लागू की जाएगी, इससे राजस्थानी भाषा को भी बढ़ावा मिलेगा, इस नीति के अन्तर्गत राजस्थानी फिल्मों के निर्माण के लिए 25 लाख रुपए तक का इंसेंटिव सपोर्ट दिया जाएगा, जो कि पहली बार होगा, साथ ही राजस्थानी फिल्मों के लिए `ळैज् में शत प्रतिशत की छूट भी दी जाएगी। इसके लिए सिंगल विंडो क्लीयरेंस सिस्टम अपनाया जाएगा, प्रदेशभर के कलाकारों को अपनी कला का प्रदर्शन का अवसर प्रदान करने के लिए सभी जिलों में 30 मार्च को राजस्थान दिवस पर राजस्थान उत्सव का आयोजन किया जाएगा, वहीं राजस्थान की युवा शक्ति को अन्य राज्यों की संस्कृति से रूबरू कराने के लिए प्रदेश के 10,000 प्रतिभाशाली युवाओं, कलाकारों और साहसी खिलाड़ी के लिए नेहरू यूथ कल्चर एक्सपोजर प्रोग्राम भी चलाया जायेगा।

अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास की समस्याऐं एवं उनका समाधान

भूमि की समस्या–पर्यटन का विकास पर्याप्त मात्रा में होटलों की स्थापना व अन्य सुविधाओं की उपलब्धि पर निर्भर करता है। शहरी क्षेत्रों का तेजी से विकास होने से होटल व पर्यटन इकाइयाँ स्थापित करने के लिए भूमि का मिलना काफी कठिन होता जा रहा है। अतः नगर–नियोजन में रियायती दरों पर इनके लिए उचित प्रावधान किया जाना चाहिए। तभी व्यावसायिक दृष्टि से इनको लाभकारी बनाना सम्भव हो सकता है।

केन्द्रीय व राज्यीय पूँजी–सब्सिडी के रूप में वित्तीय सहायता–जिस प्रकार औद्योगिक विकास के लिए पूँजी–सब्सिडी का प्रावधान किया गया है, उसी प्रकार पर्यटन क्षेत्र के अभावों को ध्यान में रखते हुए नये प्रोजेक्टों के लिए पूँजी–सब्सिडी की व्यवस्था की जानी चाहिए। जिससे उद्यमकर्त्ता पर्यटन क्षेत्र में आने के लिए आकर्षित हो सकें।

दिसम्बर, 1993 से राज्य सरकार ने पर्यटन विकास के लिए एक पूँजी–विनियोजन की सब्सिडी–योजना लागू की है। हैरीटेज होटलों को छोड़कर अन्य पर्यटन इकाइयों, जैसे एक सितारा व इससे ऊपर की श्रेणी के होटल, मार्ग में स्थित मोटल, होली डे रिसॉर्ट, मनोरंजन–पार्क, सफारी पार्क, आदि में मान्य पूँजीगत–विनियोग पर 15 प्रतिशत या 15 लाख रू. तक की सब्सिडी दी जा सकती है।

ऐसी ही इकाइयाँ राज्य की म्यूनिसिपल सीमाओं में स्थित हैं। इनके लिए सब्सिडी 20 प्रतिशत या 20 लाख रू. तक दी जा सकती है। किसी भी भाग में स्थित 'हैरीटेज होटलों' के लिए भी पूँजी–विनियोग की 20 प्रतिशत राशि या 20 लाख रू. जो भी हो, सब्सिडी के रूप में दी जा सकती है।

''हैरीटेज होटल'' उस किले, महल या हवेली को कहते हैं जो 75 वर्ष से अधिक समय से अस्तिव में है। जिसका उपयोग अब होटल के रूप में किया जा रहा है। इन्हें तीन श्रेणियों में रखा गया है:

हैरीटेज होटल जिनमें न्यूनतम 5 कमरे, 10 शैयाएँ और पारम्परिक पर्यावरण होता है, जो 1950 से पहले के बने है।

हैरीटेज क्लासिक जिनमें 15 कमरे, 30 शैयाएँ, आधे कमरे वातानुकूलित हों तथा जिनका निर्माण 1935 से पूर्व का हुआ हो। जिनमें पारम्परिक क्षेत्रीय व्यंजन व कोन्टीनेन्टल व्यंजन की प्रस्तुति तथा तरणताल, हैल्थ क्लब, टेनिस लॉन, घुड़सवारी, गोल्फ कोर्स की सुविधाओं का होना जरूरी माना गया है।

उदार शर्तो पर कर्ज की व्यवस्था—पर्यटन क्षेत्र के विकास में उद्योगों की तुलना में अधिक समय लगता है। इसलिए वित्तीय संस्थाओं द्वारा कर्ज की शर्तो को अधिक उदार बनाने की आवश्यकता है। इनको 10 प्रतिशत मार्जिन मनी (उद्यमकर्त्ता द्वारा लगाई जाने वाली मुद्रा) पर कर्ज मिलना चाहिए। इनके लिए ब्याज व मूलधन सहित पुनर्भुगतान की अवधि 15 वर्ष रखी जा सकती है। अलग—अलग नगरों में ऋण चुकाने की अवधि की कानूनी छूट तीन से सात वर्ष तक रखी जा सकती है। इस छूट की अवधि बढ़ाने से उद्यमकर्त्ताओं को सहूलियत होगी, क्योंकि पर्यटन की परियोजनाओं के क्रियान्वयन में अधिक विलम्ब हो जाता है।

नये होटलों की स्थापना के लिए ईक्विटी—पूँजी की व्यवस्था—नये होटलों की स्थापना के लिए ईक्विटी पूँजी की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। जिससे वित्तीय संस्थाओं के कर्ज पर आश्रित होने से ब्याज का भार ऊँचा हो जाता है। इसलिए होटल—उद्योग के लिए सब्सिडी व कर्ज के साथ—साथ ईक्विटी पूँजी की व्यवस्था भी की जानी चाहिए। इससे निजी उद्यमकर्त्ताओं द्वारा होटल निर्माण को प्रोत्साहन मिलेगा। यह कार्य 'रीको' द्वारा उद्योगों की भांति होटल निर्माण के लिए भी किया जा सकता है। एक पृथक 'पर्यटन विकास निगम' की स्थापना केन्द्रीय व राज्य स्तर पर की जा सकती है। जिससे उद्यमकर्ताओं को वित्त के अभाव का सामना न करना पड़े।

करों में रियायतें व छूटें—बिक्री कर से प्रारम्भिक तीन से सात वर्षो के लिए (विभिन्न श्रेणी के अनुसार) छूट दी जानी चाहिए। चूँकि पर्यटन क्षेत्र विदेशी विनियम अर्जित करने में मदद करता है। पंजीकृत विश्रामगृहों व होटलों में अल्कोहलयुक्त पेय—पदार्थो पर राज्य आबकारी शुल्क में कुछ छूट देने का विचार किया जा सकता है। जिसमें 'बीयर' की बिक्री की स्वतंत्रता होनी चाहिए। होटलों में प्रयुक्त होने वाले आयात्ति उपकरणों व साजो—समान पर आयात—शुल्क में 50 प्रतिशत की छूट दी जानी चाहिए। डीजल जेनरेटिंग सेट की खरीद पर सब्सिडी दी जानी चाहिए।

होटल—विकास के लिए विशेष सुविधाएँ—होटल—उद्योग का विकास करने के लिए भवन—निर्माण सामग्री का आवंटन इस क्षेत्र के लिए प्राथमिकता के आधार पर किया जा सकता है। इनके लिए विशेष कोटा निर्धारित किया जा सकता है। जिसके लिए पानी व बिजली की दरों का निर्धारण उद्योगों की भांति ही किया जाना चाहिए। जो रियायतें व छूट नये उद्योगों को दी जाती हैं, वे पर्यटन क्षेत्र में भी दी जानी चाहिए।

पर्यटकों के लिए निवास की व्यवस्था का विस्तार—पर्यटकों के लिए होटल—व्यवस्था के विस्तार पर अध्ययन किया गया है। ऐसा माना जाता है कि भारतीय व्यावसायिक यात्रियों की संख्या के बढ़ने के कारण पाँच या चार सितारा होटलों में विदेशी पर्यटकों के लिए निवास की व्यवस्था अपर्याप्त रहती है, इसलिए इसको बढ़ाने की नितान्त आवश्यकता है। उपर्युक्त व्यवस्था शेखावाटी क्षेत्र के पर्यटन विकास को देखते हुए ही की जा सकती है।

इसके लिए जिन सरकारी इमारतों का वर्तमान में उपयोग नहीं होता है, उन्हें होटलों या पर्यटन—बंगलों में सुगमतापूर्वक बदल देना चाहिए। सरकारी दफ्तरों के निर्माण कार्य को तेजी से बढ़ाया जाना चाहिए। सरकारी भवन शुरू में होटल की दृष्टि से बनाये गये थे, तथा बाद में उनमें सरकारी दफ्तर स्थापित कर दिए गए, उन्हें खाली कराकर पुनः होटल के लिए काम में लिए जा सकें। कई निजी भवनों में भी काफी जगह खाली पड़ी रहती है, जिनके मालिक सम्भवतः उनको अतिरिक्त आमदनी के लिए उनका उपयोग पर्यटकों के लिए करना पसंद करते हैं। इस सम्बन्ध में होटलों व ट्रेवल एजेन्टों की सेवाओं का उपयोग करके निजी निवासों में पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था की जा सकती है।

परिवहन के साधनों का समुचित विकास—परिवहन का विकास पर्यटन—विकास का हृदय माना जा सकता है। इसके लिए सड़कों का विकास, आधुनिक सुविधाओं से युक्त बसों, कारों, स्टेशन वैगनों, मिनी—बसों, हवाई अड्डों और एयर बसों, आदि की उपलब्धता आवश्यक होती है। निजी क्षेत्र में हवाई टैक्सियों व हैलीकॉप्टर सेवाओं को प्रोत्साहित किया जा सकता है। 'मिड—वे' व होटलों की सुविधा बढ़ाई जानी चाहिए।

शिक्षित ड्राइवर व अन्य व्यक्ति उत्तम गाइड का काम कर सकते हैं। पर्यटक वापस लौटते समय अपने साथ यात्रा की मधुर स्मृतियाँ व कटु अनुभव दोनों ले जाते हैं। यदि उनके साथ उत्तम व्यवहार होगा तो वह प्रभावित होकर लौटेंगे तथा अन्य लोगों को शेखावाटी—भ्रमण व राजस्थान—भ्रमण के लिए प्रोत्साहित करेंगें। यदि पर्यटक के साथ धोखाधड़ी, दुर्व्यवहार व अशिष्टता हुई तो उसे उन्हें अनुचित कष्ट उठाने पड़े है, तो आगे के लिए पर्यटक हतोत्साहित होगा। इसलिए पर्यटकों के लिए परिवहन, निवास, भोजन, पेय—पदार्थो आदि की उत्तम व्यवस्था होनी चाहिए।

शेखावाटी में सीकर को राष्ट्रीय एयरपोर्ट बनाया जा सकता है। जिससे विदेशी चार्टर्ड—उड़ानें यहाँ के लिए चालू की जा सकती है। ग्रुप—यात्रा व गन्तव्य स्थान—शेखावाटी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए उड़ाने प्रारम्भ की जा सकती है। अधिक से अधिक विदेशी पर्यटक राजस्थान में शेखावाटी को अपना गन्तव स्थान बना सकते हैं। इसका आशय यह है कि

शेखावाटी को अपना आधार बनाकर जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर आदि स्थानों को देखने के लिए आ जा सकते हैं। उनके लिए 'पधारो म्हारे देश' का संदेश शेखावाटी में पर्यटन–विकास के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होगा।

शेखावाटी क्षेत्र में काफी विज्ञापन, सूचना–सामग्री, परिवहन निवास–व्यवस्था एवं अन्य सुविधाओं की आवश्यकता होगी। यह कार्य युद्ध–स्तर पर करने की आवश्यकता है। पहियों पर राजमहल नामक रेलगाड़ी का उपयोग आकर्षण का विषय रहा है। जबकि बड़ी लाईन पर 'पैलेस ऑन व्हील्स' गाड़ी सितम्बर 1995 से ही चालू कर दी गई है।

मनोरंजन की सुविधाओं का विकास–पर्यटन में मनोरंजन की सुविधा सर्वोत्तम होनी चाहिए। अतः स्वाभाविक है कि कार्यक्रमों का स्तर विविधता तथा भाषा–सम्बन्धी प्रश्नों में गुणवत्ता के विकास पर अधिकाधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। स्थानीय लोक कलाकारों के कार्यक्रमों का संयोजन भी भलीभांति करना चाहिए। उनकी विविधता व गुणवत्ता पर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए।

हस्तशिल्प वस्तुओं की बिक्री की व्यवस्था व पर्यटन विकास– शेखावाटी की दस्तकारियों और पर्यटन–विकास का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। शेखावाटी क्षेत्र में कई प्रकार की कलात्मक व उच्च कोटि हस्तशिल्प की वस्तुएँ बनती हैं। जिन्हें विदेशी बड़े चाव से खरीदते हैं। इनमें रत्न–आभूषण, वस्त्र, मूर्तियाँ आदि का विशेष महत्व हैं। माल की गुणवत्ता, कीमत और डिजायनों की विविधता अलग होती है। उत्पादन व विपणन के प्रमाणीकरण पर ध्यान देने की आवश्यकता है। प्रथम, कारीगर को अपने माल की उचित कीमत मिले, द्वितीय पर्यटक के साथ किसी प्रकार की धोखाधड़ी न हो। इसके लिए बिक्री केन्द्रों की व्यवस्था में अत्यधिक सुधार करने की आवश्यकता है, शेखावाटी क्षेत्र इसमें काफी आगे है।

अन्य सुझाव–शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन विकास के लिए कानून व व्यवस्था में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा छोटी–छोटी अनेक बातों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। जैसे पर्यटकों को भिखारी तंग न करें, उन्हें कहीं पर घेर लेने का प्रयास न करें। उनके साथ किसी भी प्रकार का अशिष्ट व्यवहार न हो। यह भी प्रस्ताव है कि अलग से 'पर्यटन पुलिस' बनाई जाए, जिसे पर्यटकों की शिकायतों का निराकरण करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

पर्यटन–विभाग को सम्बन्धित सेवाओं का लाइसेंस देने और निरीक्षण का अधिकार दिया जाना चाहिए। शेखावाटी क्षेत्र हमें राज्य में आने वाले देशी व विदेशी पर्यटकों की प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों पर ध्यान देना चाहिए। सभी सुविधाओं व साधनों को बेहतर बनाना चाहिए। जिससे भविष्य में पर्यटकों की संख्या में और वृद्वि हो सकें।

शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन के लिए संकट का दौर–2010–11 में शेखावाटी में पर्यटन–उद्योग को काफी धक्का पहुँचा था। राज्य में राजनीतिक अशांति, विशेषकर मन्दिरों में विवाद के कारण शेखावाटी में पर्यटकों का आगमन बहुत कम हुआ था। जिससे पर्यटन उद्योग में लगे व्यक्तियों के लिए रोजगार व आमदानी के अवसर घटे थे। उनमें निराशा की भावना फैल गई थी। पर्यटकों के माध्यम से हमें जो निर्यात के आर्डर मिले थे, उनमें गिरावट आई है। होटलों को लाभ में चलाना काफी मुश्किल हो गया था।

यदि भविष्य में स्थिति अनुकूल नहीं रही तो पर्यटन इस उद्योग को भारी संकट का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए आवश्यक है कि क्षेत्र में कानून व्यवस्था में तुरन्त सुधार हो। जिससे लोग निर्भय होकर क्षेत्र में भ्रमण कर सकें। देश में कश्मीर का पर्यटन उद्योग भी विपरीत राजनीतिक दशाओं के कारण काफी क्षतिग्रस्त हो चुका है।

इसलिए स्थानीय सरकार को आवश्यक कदम उठाने चाहिए। जिससे पर्यटन के उद्यमकर्ता व विभिन्न कर्मचारी, ड्राईवर, गाइड, हथकरघा, दस्तकारी और उद्योगों, आदि में संलग्न व्यक्ति अपना रोजगार छोड़ने को बाध्य न हो। पर्यटन के विकास से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान की आवश्यकता है। पर्यटन उद्योग को मंद के दौर से निकालने की है।

दिसम्बर, 1992 में अयोध्या घटना के बाद हुए देशव्यापी साम्प्रदायिक दंगों का पर्यटन–उद्योग पर विपरीत प्रभाव पड़ा था। अतः इस उद्योग की प्रगति के लिए आन्तरिक शांति, सद्भाव व सौहार्द्र की नितान्त आवश्यकता है। स्वयं पर्यटक अपने को जोखिम में नहीं डालना चाहता। इसलिए आतंक या भय उत्पन्न होते ही पर्यटक सर्वप्रथम अपना कार्यक्रम स्थागित करते हैं। जिससे होटलों पर विपरीत असर पड़ता है। देश को विदेशी मुद्रा से हाथ धोना पड़ता है। अतः पर्यटन उद्योग बहुत संवेदनशील माना गया है। मानवीय व्यवहार भाई चारे की नींव पर खड़ा है। जिसे ठेस पहुंचाने की बजाय सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

पर्यटक विशेषज्ञों का मानना है कि शेखावाटी में त्रिकोण के अन्तर्गत भविष्य में सीकर, चूरू व झुझुनूं को शामिल किया जाए। इससे पर्यटन–विकास को काफी बल मिलेगा। पर्यटन–उद्योग एक सेवा–क्षेत्र की आर्थिक क्रिया है। इसके विकास पर मानवीय गुणों व व्यवहार का प्रभाव पड़ता है। इसे 'लपका' समस्या से मुक्त किया जाना चाहिए। यहाँ शेखावाटी पर्यटन विकास निगम लि. का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है, क्योंकि इसका राज्य में पर्यटन–विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

पर्यटन के विकास की विपुल सम्भावनाओं को देखते में रखते हुए प्रति वर्ष धनराशि खर्च की जानी चाहिए।

भविष्य में सीकर, चूरू व झुन्झुनूं में पर्यटक स्वागत केन्द्र स्थापित किये जाएगें। शेखावाटी में यात्री निवास तथा टूरिस्ट बंगले का निर्माण करवाया जाएगा। राणीसती मन्दिर को विकसित करने की आवश्यकता है। कई हवेलियाँ के जीर्णोद्वार और सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता है।

निष्कर्ष :–

शेखावाटी में इस उद्योग के विकास हेतु प्रयास किए जा रहे हैं ।धार्मिक पर्यटन स्थलों का समुचित विकास कर धार्मिक–पर्यटन को प्रोत्साहित किया जा सकता है। जिससे स्थानीय संस्थाओं को आकर्षक एवं सुन्दर बनाना चाहिये। क्षेत्र के कई स्थान स्वास्थ्यप्रद जलवायु की दृष्टि से उपयुक्त हैं। जिन्हें स्वास्थ्य लाभ के विश्रान्तिगृह के रूप में विकसित किया जाये। पर्यटकों हेतु पर्यटन स्थलों पर होटलों का विकास भी होटलों का निर्माण, उनमें सेवाओं का सुधार आदि किया जाना चाहिये। इस दिशा में पर्यटन विभाग प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। शेखावाटी में यातायात का अभाव पर्यटक स्थलों के विकास में बाधा है इसे शीघ्र दूर किया जाना चाहिए। पर्यटकों के लिये उपयुक्त पर्यटन साहित्य पर पुस्तकें 'पर्यटन विभाग' द्वारा उपलब्ध करवानी चाहिये। जिनमें स्थानीय ग्रामीण पर्यटक स्थलों का भी पूर्ण विवरण होना चाहिये जिससे पर्यटक कुछ विशेष शहरों व स्थलों तक सीमित न रहकर राज्य के आन्तरिक स्थलों का भी आनन्द उठा सकें। पर्यटकों का मार्ग दर्शन करने हेतु प्रत्येक पर्यटन स्थल पर जन सम्पर्क कार्यालय की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए। अभी राज्य में यह सुविधा केवल बड़े शहरों तक ही सीमित है। पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु पर्यटन सप्ताह का आयोजन मेलों, उत्सवों एवं त्यौहारों पर किया जाना चाहिये। अभी इस तरह के आयोजन बहुत ही कम किये जाते हैं। शेखावाटी में कई हवेलियाँ हैं, जिन्हें पर्यटकों के लिये विश्रामगृह बनाया जा सकता है। बार (मदिरापान) की व्यवस्था भी पर्यटकों को काफी आकर्षित करती है। अतः इस सुविधा को सभी स्थलों पर उपलब्ध करवाया जाये। केन्द्रीय पर्यटन स्थल पर एक सुविज्ञ और प्रशिक्षित द्विभाषी स्वागतकर्ता नियुक्त किया जाना चाहिये। जिससे वह विदेशी पर्यटकों को आकर्षक स्थलों की जानकारी प्रदान कर सकें। शेखावाटी क्षेत्र में भौगोलिक पर्यावरणीय विशिष्टताऐं इतनी अधिक हैं कि अगर यहाँ फिल्मों की शूटिंग की सुविधाऐं उपलब्ध करवा दी जाए तो पर्यटन उद्योग का विकास त्वरित गति से हो सकता है। शेखावाटी क्षेत्र में मेलों, मोटर साइकिल और कार रेलियों तथा वन्य जीवन आदि की व्यवस्था कर पर्यटन विकास की सम्भावनाओं को बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1 बोराणा रमेश :– "राजस्थान के कला गौरव, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर।

2 गर्ग बीएल "राजस्थान का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन", प्रकाशकः शिव पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

3 गर्ग दामोदर लाल :– "अलवर राज्य का इतिहास" अनु प्रकाशन, 958 धामानी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता अलवर।

4 गोस्वामी डॉ. प्रेमचंद राजस्थान सांस्कृतिक कला एवं साहित्य, – प्रकाशकः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर

5 राठौड़ विक्रम सिंहः– "राजस्थान की सांस्कृतिक इतिहास", राजस्थानी साहित्य संस्थान, जयपुर।

6 राजस्थान पर्यटन नीति, पर्यटन कला संस्कृति विभाग, जयपुर।

7 राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित ब्रोशर्स।

8 सक्सेना शालिनीः– राजस्थान के लोक तीर्थ" श्याम प्रकाशन जयपुर

9 शर्मा भारती :– "अलवर के मंदिरः सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन" (थीसिस, 1993) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

10 दि हैरिटेज वेल्थ ऑफ राजस्थान राजस्थान, टूरिज्म आरटीडीसी, जयपुर।

11 वार्षिक बजट प्रतिवेदन (2001 – 2022, 2023) , राजस्थान सरकार ।

12 पर्यटन नीति 2001 एवम 2007

13 राजस्थान पर्यटन नीति 2020